एकीभाव विधान

रचयिता

सारस्वत कवि

आचार्य विभवसागर

आदिनाथ पूजा (तूणक छन्द)

तर्ज – पार्श्वनाथ पूजा (नीर गंध अक्षातन्)

आइए! पधारिये! विराजिये, सुदेव जी।
आदिनाथ देव जी, सु आदिनाथ देव जी॥
आदिनाथ आप हो, सहस्रनाम धार जी।
भक्ति भाव पूजता, जिनेन्द्र बार-बार जी॥

ॐ ह्रीं श्री आदिनाा जिन। अत्र अत्र अवतर अवतर संतोषट् आह्वाननम्। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

नीरतीर नीर लाय, क्षीर सिन्धु क्षीर सा।
भावना समीर लाय, चित्त शुद्ध वीर सा॥
आदिनाथ आप हो, सहस्रनाम धार जी।
भक्ति भाव पूजता, जिनेन्द्र बार-बार जी॥

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय! जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं नि. स्वाहा।

गंध क्या सुगन्ध है, कवित्व काव्य छंद है।
चंदनादि द्रव्य क्या, चरित्र का प्रबंध है॥
आदिनाथ आप हो, सहस्रनाम धार जी।
भक्ति भाव पूजता, जिनेन्द्र बार-बार जी॥

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय! संसार ताप विनाशनाय चंदनं नि. स्वाहा।

चेतना अखण्ड है, अमूर्त है अनंत है।
शक्ति रूप शुद्ध शान्त, सहस्रनाम धार जी।
आदिनाथ आप हो, सहस्रनाम धार जी।
भक्ति भाव पूजता, जिनेन्द्र बार-बार जी॥

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय! अक्षय पाद प्राप्त्यै अक्षतान् नि. स्वाहा।

पुष्प है गुलाब का, सुभाव है गुलाब सा।
वीतराग देव दो, स्वभाव वीतराग सा॥
आदिनाथ आप हो, सहस्रनाम धार जी।
भक्ति भाव पूजता, जिनेन्द्र बार–बार जी॥

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय! कामबाण विनाशकाय पुष्पं नि. स्वाहा।

मिष्ठ अन्न मोदकं, प्रभावना प्रमोदकं।
शुद्ध व्यंजनादि ले, छुधादि रोग नाशनं॥
आदिनाथ आप हो, सहस्रनाम धार जी।
भक्ति भाव पूजता, जिनेन्द्र बार–बार जी॥

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय! क्षुधा रोग विनाशनय नैवेद्यं नि. स्वाहा।

दीप आरती जला, समीप लाय हो भला।
मोह अंधकार मेट, देय ज्ञान की कला॥
आदिनाथ आप हो, सहस्त्रनाम धार जी।
भक्ति भाव पूजता, जिनेन्द्र बार–बार जी॥

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय ! मोहांधकार विनाशकाय दीपं नि. स्वाहा।

कर्म को जलाइए, म–कर्म–आस–पास हो।
अष्ट कर्म नाश हो, सुसिद्ध लोक वास हो॥
आदिनाथ आप हो, सहस्त्रनाम धार जी।
भक्ति भाव पूजता, जिनेन्द्र बार–बार जी॥

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय ! अष्ट कर्म दहनायधूपं नि. स्वाहा।

आम, सेव, संतरा, सुपारियों भरे–भरे।
स्वर्ण थाल ये धरे, विशुद्ध भावना भरे॥
आदिनाथ आप हो, सहस्त्रनाम धार जी।
भक्ति भाव पूजता, जिनेन्द्र बार–बार जी ॥

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय! मोक्ष फल प्राप्तये फलं नि. स्वाहा।

अष्ट द्रव्य हाथ ले, मनोज्ञ भाव साथ ले।
इष्ट देव पूजने, जिनेन्द्र भक्त ये चले॥
आदिनाथ आप हो, सहस्रनाम धार जी।
भक्ति भाव पूजता, जिनेन्द्र बार-बार जी ॥

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय! अनर्घ पद प्राप्तये अर्घ्यं नि. स्वाहा।

भक्ति से मुक्ति

एकमेक है मिले-जुले,
'क्षीर' नीर वत् घुले मिले।
भव भव मेरे साथ चले
पलभर मुझसे नहीं टले॥

दुस्तर कर्मों के बन्धन,
देते रहते हैं क्रन्दन।
लेकिन जिनरवि संस्तुति से,
भक्तिभावमय प्रस्तुति से॥

चरण कमल के वन्दन से,
छुटकारा हो बन्धन से
उस पावन भक्ति द्वारा।
प्रबल पुण्य शक्ति द्वारा॥

कौन पाप, संताप, बला ?
जीता जाता नहीं भला।
सब कुछ जीते जाते हैं,
अचरच नहीं बताते हैं॥

भावों की निर्मलधारा में, आतम को नहलाता हूँ।
वादिराज मुनिवर के चरणों, श्रद्धा सुमन चढ़ाता हूँ ॥1॥

पूजा मंत्र - ॐ ह्रीं एकीभावसदृशकर्मबंधनाशनसमर्थाय श्रीतीर्थंकर परमदेवाय नमः ।

पापान्धकार नाशक

जैन तत्त्व विद्याधारी,
ऋषि, मुनिगण, यति, अनगारी।
बहुत काल से जान रहे,
तुमको ऐसा मान रहे ॥

इन्द्रिय विषय विजेता हो,
मोक्षमार्ग के नेता हो।
ज्योतिर्मयी 'प्रकाशक' हो,
पाप तिमिर के नाशक हो ॥

जिनवर तेरे चरणयुगल,
आन विराजे हृदय कमल।
मन-मंदिर में वास करें,
सम्यक् तत्त्व प्रकाश करें॥

पाप रूप वह अंधियारा,
पुण्य दीप से जो हारा।
कैसे यहाँ निवास करे?

टिक सकता क्या पास अरे ?
भावों की निर्मलधारा में, आतम को नहलाता हूँ।
वादिराज मुनिवर के चरणों, श्रद्धा सुमन चढ़ाता हूँ॥2 ॥

पूजा मंत्र - ॐ ह्रीं हृदयस्थितपापान्धकारविनाशनसमर्थाय ज्योतीरूपाय श्रीतीर्थंकर परदेवाय नमः।

रोग नाशक

भगवन् की जो भक्ति करें,
मन में वंदन भाव धरे।
इकटक चित्त सुधारा हो,
छाया हर्ष अपारा हो॥

बहे आँसुओं की धारा,
भाव जगा प्यारा प्यारा।
भींगा-भींगा आनन हो,
गद्गद् स्वर में गायन हो॥

बहुत काल से पाले हो,
नाग व्याधि के काले हो।
विषधर जैसे डसते हो,
तन बांमी में बसते हो।

संस्तव रूपी मंत्रों से,
करें अर्चना यन्त्रों से।
भक्त भजें तुमको जिस क्षण,
रोग भगें उनके तत्क्षण॥

भावों की निर्मलधारा में, आतम को नहलाता हूँ।
वादिराज मुनिवर के चरणों, श्रद्धा सुमन चढ़ाता हूँ॥3॥

पूजा मंत्र - ॐ ह्रीं स्तोत्रमंत्रप्रभावेनदेहस्थविषव्याधिनिष्कासनसमर्थाय श्रीतीर्थंकर परदेवाय नमः।

सुन्दर रूप कारक

भव्यों के पुण्योदय से,
मंगलमयी शुभोदय से।
आप स्वर्ग अवतरण हुये,
जगती को शुभ शरण दिये॥

तभी इन्द्र के द्वारा जो,
बरषे रत्न अपारा जो।
स्वर्णमयी रच दी भूतल
चमत्कार तेरा केवल॥

ध्यान द्वार से आये हो,
बड़े प्रेम मन भाये हो।
मन-मन्दिर में रहते हो,
तन-मन सुन्दर करते हो॥

कुन्दन सी करते काया,
इसमें क्या तेरी माया।
जिनवर कुछ साश्चर्य कहीं?
विस्मय या आश्चर्य नहीं॥

भावों की निर्मलधारा में, आतम को नहलाता हूँ।
वादिराज मुनिवर के चरणों, श्रद्धा सुमन चढ़ाता हूँ॥4॥

पूंजा मंत्र - ॐ ह्रीं गर्भावतारप्राक्पृथ्वीकनकमयकरणसमानभाक्तिकतनु सुवर्णीकरणसमर्थाय श्रीतीर्थंकर परदेवाय नमः ।

दुःख नाशक प्रार्थना

हे भगवन्! सुखदायी हो,
आप अकारण भाई हो।
प्रभु आपसा कोई नहीं,
जग में दूजा मिला नहीं॥

सुखदाता क्षेमंकर हो,
शंकर और शिवंकर हो।
अटल-अचल अतिबल वाले,
अव्याबाधी गुण वाले॥

निशदिन ध्यान लगाया है,
तुमको नाथ बुलाया है।
मन मन्दिर की शैय्या पर,
भक्ति भाव की हैंया पर॥

कब से मन में रहते हो,
दुःख हमारे सहते हो।
जिनवर दुःख न सहन करें,
सभी दुःखों का हनन करें॥

भावों की निर्मलधारा में, आतम को नहलाता हूँ।
वादिराज मुनिवर के चरणों, श्रद्धा सुमन चढ़ाता हूँ॥5॥

पूजा मंत्र - ॐ ह्रीं भक्तजनहृद्यस्थिततत्सर्वक्लेशविनाशनसमर्थाय श्रीतीर्थंकर परदेवाय नमः।

जिनवाणी महिमा

घूम घूमकर भव वन में
बहुत काल से जीवन में।
जिनवाणी अमृत वापी,
ज्ञान सुधारस जो व्यापी॥

बड़े भाग्य से पायी है,
अतिशीतल सुखदायी है।
चंदा और हिमानी सी,
काशीतल के पानी सी॥

बावड़िया के अंदर में,
शीतल सुखद समुन्दर में।
नख-शिख डूबा सारा तन,
भव भोगों से ऊबा मन॥

गर्मी उसे सताती क्या?
अग्नि उसे जलाती क्या?
दावानल दबकर भागे,
ज्ञान सुधारस चिद् पाके ॥

भावों की निर्मलधारा में, आतम को नहलाता हूँ।
बादिराज मुनिवर के चरणों, श्रद्धा सुमन चढ़ाता हूँ॥6 ॥

पूजा मंत्र - ॐ ह्रीं त्वन्नयकथापीयूषवापीमध्यनिर्मग्नभाक्तिकदु:खदावोप तापशांतकरणसमर्थाय श्रीतीर्थंकर परदेवाय नमः ।

मंगलकारी प्रभुचरण

लोकत्रय पावन कर्त्ता,
जीवमात्र दु:ख हर्त्ता।
तीर्थंकर जब गमन करें,
नीमण्डल में कदम धरें॥

भक्तिभाव से आते हैं,
सुरगुण कमल रचाते हैं।
पंकज पद-पंकज पाते,
पंकज स्वर्णिम हो जाते॥

अद्‌ाुत महिमा वाले हो,
भक्तों के रखवाले हो।
रहे आप हमारे मन,
अंग-अंग छूते भगवान्॥

कहूँ कोन? कलयाण भला,
आकर मुझको नहीं मिला।
बिना बुलाये आते हैं,
मंगल मुझे बुलाते हैं॥

भावों की निर्मलधारा में, आतम को नहलाता हूँ।
वादिराज मुनिवर के चरणों, श्रद्धा सुमन चढ़ाता हूँ।।7॥

पूजा मंत्र - ॐ ह्रीं पादन्यासस्थलस्वर्णकमलामिवत्वत्स्पृशन्ममभक्तस्य-सर्वश्रेय: प्रदायकाय श्रीतीर्थंकर परदेवाय नम:।

निजवाणी श्रवण फल

जिसे जीतना दुस्कर है
दुर्निवार वह दुःखकर है।
ऐसे मदन विजयकार,
नभमण्डल में कदम धरें

भक्तिभाव से आते हैं,
सुरगुण कमल रचाते हैं।
पंकज पद -पंकज पाते,
पंकज स्वर्णिम हो जाते॥

अद्भूत महिमा वाले हो,
भक्तों के रखवाले हो।
रहते आप हमारे मन,
अंग-अंग छूते भगवान्॥

कहूँ कौन? कल्याण भला,
आकर मुझको नहीं मिला।
बिना बुलाये आते हैं,
मगल मुझे बुलाते हैं॥

भावों की निर्मलधारा में, आतम को नहलाता हूँ।
वादिराज मुनिवर के चरणों, श्रद्धा सुमन चढ़ाता हूँ॥8॥

पूजा मंत्र - ॐ ह्रीं भक्तियात्र्यातवद्वचनामृतपिबन्भक्तिक दुर्वाररोगनिवारण-सर्वश्रेयः श्रीतीर्थंकर परदेवाय नमः।

मानस्तंभ वर्णन

मानथंभ पाषाण रचित,
रत्नों से मण्डित चित्रित।
वैसे यहाँ अनेकों हैं,
जग में हमनें देखे हैं॥

भवि का मान गलाते ना
भवि को मोक्ष दिलाते ना।
तब जिनवर का समवशरण
देने वाला परम शरण!

चार दिशा में शोभित जो,
मानथम्भ मन मोहित जो।
कैसे मान गला सकते?
कैसे मोक्ष दिला सकते?

जिनवर सन्निधि जो पायी
इस कारण शक्ति आयी।
मान रोग हर लेने की
सम्यक्दर्शन देने की॥

भावों की निर्मलधारा में, आतम को नहलाता हूँ।
वादिराज मुनिवर के चरणों, श्रद्धा सुमन चढ़ाता हूँ॥9॥

पूजा मंत्र - ॐ ह्रीं मानस्तम्भसदृश-त्वत्समीपत्वप्राप्तभाक्तिकजनमान-रोगहरणसमर्थाय श्रीतीर्थंकर परदेवाय नमः।

उभयलोक फल प्रदाता

प्रभो! आपकी काया से,
मंगलगिरि तन माया से।
बहने वाली सुखद हवा,
रोग धूल को रही भगा!

आती जंतर-मंतर सी,
कर देती छू मंतर सी।
महाभयानक आंधी को,
भस्मक जैसी व्याधी को॥

हृदय कमल में ध्याये जो,
तुमको सदा बुलाये जो।
उसके मन में वास करें,
रोग अनेकों नाश करें॥

जीवन उसका मंगल हो,
करते दूर अमंगल को।
होते हैं कल्याण सभी,
कौन रहेगा शेष कभी?

भावों की निर्मलधारा में, आतम को नहलाता हूँ।
वादिराज मुनिवर के चरणों, श्रद्धा सुमन चढ़ाता हूँ॥10॥

पूजा मंत्र - ॐ ह्रीं त्वन्मूर्तिस्पर्शितवायुना निरवधिरोगधूलिधुन्वन्समर्थाय श्रीतीर्थंकर परदेवाय नमः।

भक्त समर्पण

आप जानते हो जिनवर,
बतलाऊँ मैं क्या गिनकर।
भव-भव में दु:ख पाये जो,
मुँह से कहे न जायें वो॥

यादें दु:ख दिलाती हैं,
आकर हमें रुलाती हैं।
हथियारों सा घाव करें,
जले घाव पर नमक भरें॥

शिवपुर पथ के गामी हे!
सब जीवों के स्वामी हे !
करते दया दयालु हो!
करते कृपा कृपालु हो!

चरण-शरण में आया हूँ,
भक्ति भावना लाया हूँ।
जैसा चाहें आप करें,
दु:ख दें या संताप हरें॥

भावों की निर्मलधारा में, आतम को नहलाता हूँ।
वादिराज मुनिवर के चरणों, श्रद्धा सुमन चढ़ाता हूँ॥11॥

पूजा मंत्र - ॐ ह्रीं भाक्तिकजनभव-भवदु:खनिवारणसमर्थपरमदयालु-सर्वेशाय श्रीतीर्थंकर परदेवाय नमः।

णमोकार मंत्र महिमा

महामरण की बेला में,
पड़कर विपद झमेला में।
एक श्वान पापाचारी,
पुण्य जगा अतिशयकारी॥

जीवन्धर जी आते हैं,
कानों मंत्र सुनाते हैं।
महामंत्र नवकार भला,
सुनते उसको स्वर्ग मिला॥

तब फिर चेतन भावों से,
मणिमय निर्मल जापों से।
नमस्कार मन लाता जो,
णमोकार को ध्याता जो॥

पढ़ता सुनता गाता है,
अगर इन्द्र बन जाता है।
इसमें क्या आश्चर्य कहीं?
मोक्ष मिले साश्चर्य नहीं ॥

भावों की निर्मलधारा में, आतम को नहलाता हूँ।
वादिराज मुनिवर के चरणों, श्रद्धा सुमन चढ़ाता हूँ॥12॥

पूजा मंत्र - ॐ ह्रीं मणिजपमालिकया त्वन्नमस्कारमंत्र जपद्धाक्तिकगण-स्वर्गलक्ष्मीप्रभुत्वकरण-समर्थाय श्रीतीर्थंकर परदेवाय नमः ।

भक्ति मोक्ष महल की चाबी

भक्ति सम्यग्दर्शन है,
मंगलमय आकर्षण है।
सौख्य अनंत स्वभावी है,
मोक्ष महल की चॉबी है॥

शुद्ध ज्ञान के होने पर,
दृढ़ चारित्र सजोने पर।
यदि जिनभक्ति पास नहीं,
जिनवर पद विश्वास नहीं॥

मोक्ष द्वार के ताले को,
मिथ्यातम के जाले को।
कौन मुमुक्षु खोलेगा?
इधर-उधर ही डोलेगा॥

जप-तप करने वाला हो,
चाहे जिस मत वाला हो।
यदि जिन भक्ति नहीं करे,
मुक्ति पद वह नहीं वरें॥

भावों की निर्मलधारा में, आतम को नहलाता हूँ।
वादिराज मुनिवर के चरणों, श्रद्धा सुमन चढ़ाता हूँ॥13॥

पूजा मंत्र - ॐ ह्रीं अनवधिस्त्वदुत्कृष्ट भक्तिकुञ्चिकानिमित्तेनमुक्ति-द्वारोद्घाटनकारण-समर्थाय श्रीतीर्थंकर परदेवाय नमः ।

जिनवाणी मुक्ति मार्ग दर्शक

सम्यग्दर्शन ज्ञान चरण,
रत्नत्रय व्रत का धारण।
मोक्षमार्ग कहलाता है,
भवि को मोक्ष दिलाता है॥

तत्त्व प्रकाशी वाणी का,
जिनवर की जिनवाणी का।
रत्नदीप यदि नहीं जले,
आगे-आगे नहीं चले॥

किन्तु आज यह निश्चय से,
अशुभोदय कर्मोदय से।
पापतिमिर से ढका हुआ,
दुःखगर्तों से रुका हुआ॥

तो फिर उस जिन-मारग में,
ढके रुके शिव-मारग में।
कौन पथिक चल सकता है?
शिवपुर क्या मिल सकता है ?

भावों की निर्मलधारा में, आतम को नहलाता हूँ।
वादिराज मुनिवर के चरणों, श्रद्धा सुमन चढ़ाता हूँ॥14॥

पूजा मंत्र - ॐ ह्रीं भवद्धारतीरत्नदीपेन मुक्तिपथावलोकनसामर्थ्य-प्रदायकाय श्रीतीर्थंकर परदेवाय नमः ।

भक्ति से आत्म दर्शन

अपना आत्म खजाना है,
अब तक किसने जाना है।
सीमातीत निराला है,
गुण अनंत रखवाला है।

दर्शक को आनंद करे,
आज हुआ क्यों बंद अरे।
कर्म पटल से ढका हुआ,
जन्म-जन्म से रुका हुआ॥

दर्शन दुर्लभ उसको है,
मिथ्यादर्शन जिसको है।
लेकिन भक्त कुदाली से,
अनुपम भक्ति वाली से ॥

कर्म पटल जो खोद सके,
वहीं खजाना हाथ रखे।
निर्धन भी धनवान बने,
भक्त भला भगवान बने ॥

भावों की निर्मलधारा में, आतम को नहलाता हूँ।
वादिराज मुनिवर के चरणों, श्रद्धा सुमन चढ़ाता हूँ॥15॥

पूजा मंत्र - ॐ ह्रीं कर्मक्षोणीपिहितात्मज्योतीनिधिप्रदायकाय श्रीतीर्थंकर परदेवाय नमः ।

भक्ति गंगा स्नान

भक्ति भाव की यह गंगा,
करने वाली मन चंगा।
जिन आगम वचनालय से,
सम्यक् सुनय हिमालय से॥

यह धारा बहती आयी,
शीतल सुन्दर सुखदायी।
मन श्रद्धा से नहलाये,
पाप पंक धुलता जाये॥

पैदा होकर आती है,
शिवसागर तक जाती है।
किन्तु अभी जिन चरणा में,
जिनवर की शुभ शरणा में॥

भव-भव के दुष्कर्म सभी,
धुल जायें हे नाथ अभी।
तो इसमें क्या विस्मय है,
नहीं तनिक भी संशय है॥

भावों की निर्मलधारा में, आतम को नहलाता हूँ।
वादिराज मुनिवर के चरणों, श्रद्धा सुमन चढ़ाता हूँ॥16॥

पूजा मंत्र - ॐ ह्रीं त्वद्भक्तिगंगामध्यावगाहकभक्तगणसर्वकल्मष-क्षालनसमर्थाय श्रीतीर्थंकर परदेवाय नमः ।

ध्यान से इष्ट लाभ

घाति अघाति कर्म हने,
सिद्ध हुये निष्कर्म बने।
अविनाशी पद पाया है,
शाश्वत सुख प्रकटाया है॥

मैं वह हूँ जो तुम भगवन्!
जो तुम हो मैं हूँ भगवन्!
यह बुद्धि का दोष कहो,
मिलता पर संतोष अहो!

तेरे अविरल चिन्तन से,
ध्यान रूप अवलम्बन से।
निर्विकल्पता आती है,
निज अनुभव दर्शाती है॥

अथवा सचमुच सत्य कहा,
जिस पर तेरा हाथ रहा।
भले ही दोषी कहलाये,
फिर भी इच्छित फल पाये॥

भावों की निर्मलधारा में, आतम को नहलाता हूँ।
वादिराज मुनिवर के चरणों, श्रद्धा सुमन चढ़ाता हूँ॥17॥

पूजा मंत्र - ॐ ह्रीं त्वद्ध्यायन्भाक्तिकस्य सोऽहमितिमतिप्रदायकाय श्रीतीर्थंकर परदेवाय नमः ।

अमरत्व प्राप्ति

दिव्य देशना उदधि विमल
भरा ज्ञान का निर्मल जल।
स्याद्वाद की ये लहरें,
मिथ्यामल को दूर करें॥

ओर-छोर न दिखे कहीं,
दिखता पारावार नहीं।
अखिल विश्व में व्यापक है,
सम्यक् श्रुत की ज्ञापक है ॥

बुद्धिमान सम्यक् धी से,
मनरूपी मन्दरगिरि से।
बार-बार श्रुत मन्थन से
चिन्तन करें चिरन्तन से ॥

विषयरूप विष त्याग करें,
रत्नत्रय अनुराग धरें।
शिव अमृत पा जाते हैं,
तृप्त स्वयं हो जाते है ॥

भावों की निर्मलधारा में, आतम को नहलाता हूँ।
वादिराज मुनिवर के चरणों, श्रद्धा सुमन चढ़ाता हूँ॥18॥

पूजा मंत्र - ॐ ह्रीं सप्तभंगीतरंगयुत-त्वद्वाक्यसमुद्रमंथनोद्भवपरमामृत - प्रापकाय श्रीतीर्थंकर परदेवाय नमः।

वीतराग का स्वरूप

होता स्वयं असुन्दर जो,
दिखने को वह सुन्दर तो।
चाह करे आभूषण की,
स्वर्ण रजतमय भूषण की॥

होता स्वयं पराजय जो,
रिपुओं का रखता भय जो।
अस्त्र-शस्त्र स्वीकार करें,
हाथों में हथियार धरें॥

तुम सर्वांग सु-सुन्दर हो,
सुन्दरता के मंदिर हो।
हो अजेय तुम जगती पर
रिपु अजात हो धरती पर॥

वीतराग आभूषण तुम,
लोकत्रय के भूषण तुम।
तुमको अस्त्रों-शस्त्रों से,
लेना फिर क्या वस्त्रों से॥

भावों की निर्मलधारा में, आतम को नहलाता हूँ।
वादिराज मुनिवर के चरणों, श्रद्धा सुमन चढ़ाता हूँ।।19 ॥

पूजा मंत्र - ॐ ह्रीं शस्त्रवसनभूषाविरहितपरमसुंदरस्वरूपाय श्रीतीर्थंकर परदेवाय नमः ।

स्तुति - भवदुखहारी

भवसागर के तारक हो,
प्रभुवर जग उपकारक हो।
मुक्तिवधू के स्वामी हो,
संस्तुति यह अभिरामी हो॥

करें इन्द्रगण सेवायें,
पूजन वन्दन अर्चायें।
इसमें अरे प्रशंसा क्या?
प्रभु तेरी अनुशंसा क्या?

सेवायें सत्पुरूषों की,
कारण हैं उत्कर्षों की।
भाग्यवान ही पाते हैं,
निज सौभाग्य जगाते हैं॥

प्रभु सेवा उन इन्द्रों को,
देवों और सुरेन्द्रों को।
भव-भव भ्रमण छुड़ाती है,
श्रमण पन्थ दिखलाती हैं।

भावों की निर्मलधारा में, आतम को नहलाता हूँ।
वादिराज मुनिवर के चरणों, श्रद्धा सुमन चढ़ाता हूँ।।20।।

पूजा मंत्र - ॐ ह्रीं भवसमुद्रपारंगतसिद्धि कान्तापतित्रैलोक्यप्रभु-स्तुतिश्लाघनाय श्रीतीर्थंकर परदेवाय नमः ।

स्तुति – कल्पवृक्ष समफलदायी

नाथ आपके दिव्य वचन,
हितकारी मंगल प्रवचन।
झरते वचनामृत अनुपम,
शीतल सुन्दर शुभ्र शुभम्॥

वचन आपके ऐसे हैं,
नहीं दूसरों जैसे हैं।
नहीं आप हैं दूजे सम,
महिमा क्या गा सकते हम॥

माना मेरा गुण गाना,
हो सकता है बेगाना।
तेरे गुण बतलाने में,
हो असमर्थ सुनाने में॥

फिर भी चेतन भाव विमल,
कल्पवृक्ष सम देते फल।
भक्तों को देते शिवफल
कर देते नर जन्म सफल॥

भावों की निर्मलधारा में, आतम को नहलाता हूँ।
वादिराज मुनिवर के चरणों, श्रद्धा सुमन चढ़ाता हूँ॥21॥

पूजा मंत्र – ॐ ह्रीं भक्तिपीयूषपुष्पभव्यगणाभिमतफलप्रदपारिजाताय श्रीतीर्थंकर परदेवाय नमः ।

जिनवर सन्निधि-वैर नाशक

संतुतियों निंदाओं में,
सेवाओं बाधाओं में।
क्रोध नहीं अपनाते है,
ना प्रसन्नता लाते है॥

नहीं लालिमा नयनों में,
नहीं कालिमा निजमन में।
वीतराग है चित्त विमल,
नहीं आपको कुछ अनभल॥

प्रभो! आप स्वाधीन हुए,
लोकत्रय आधीन हुए!
सन्निधि वैर मिटाती है,
परम मित्रता लाती है॥

ऐसी महिमा किसमें है,
नहीं दूसरा जिसमें है।
अतः तुम्हें अभिनंदन हो,
भक्ति भाव युत वंदन हो॥

भावों की निर्मलधारा में, आतम को नहलाता हूँ।
वादिराज मुनिवर के चरणों, श्रद्धा सुमन चढ़ाता हूँ॥22॥

पूजा मंत्र - ॐ ह्रीं कोपप्रसादविरहितपरमोपेक्षि-भुवनतिलकप्राभव- सहिताय श्रीतीर्थंकर परदेवाय नमः ।

मंगलयात्रा कारक

स्वर्गलोक की परियों ने,
मिलकर के किन्नरियों ने।
जिनकी महिमा गायी है,
गरिमा श्रेष्ठ सुनायी है॥

केवल ज्ञानी मूरत है,
शांत स्वभावी सूरत है।
तव गुण गण की संस्तुति को,
करने जो भी उद्यत हो!

उस श्रेयसपथगामी को,
वीर मार्ग अनुगामी का।
पन्थ भ्रमण न होता है,
श्रमण पंथ शिव देता है ॥

तत्त्व ग्रन्थ के सुमरण में,
वाचन चिंतन के क्षण में।
किञ्चित् भ्रम न आता है,
श्रुत ज्ञानी बन जाता है॥

भावों की निर्मलधारा में, आतम को नहलाता हूँ।
वादिराज मुनिवर के चरणों, श्रद्धा सुमन चढ़ाता हूँ।।23॥

पूजा मंत्र - ॐ ह्रीं सकलतत्त्वग्रन्थस्मरणविषयिबुद्धिप्रदायकाय श्रीतीर्थंकर परदेवाय नमः ।

भक्ति से पंचकल्याणक प्राप्ति

ज्ञानी पंडित-पंडित हे!
महा चतुष्टय मंडित हे!
परम ज्ञान सुख दर्शन ये,
बल अनंतमय अर्हन् हे!

तुमको हृदय समाता जो,
समय नियम से ध्याता जो।
योगत्राय आदर धरता,
संस्तुतियाँ सादर करता॥

महापुण्य का धारक वह,
महापुण्य का कारक वह।
संस्तुतियों को पूर्ण करे,
मोक्षमार्ग संपूर्ण करे॥

गर्भ जन्म तप ज्ञान मिले,
कल्याणक निर्वाण मिले।
पंचमहा कल्याण वरे,
जगती का कल्याण करे॥

भावों की निर्मलधारा में, आतम को नहलाता हूँ।
वादिराज मुनिवर के चरणों, श्रद्धा सुमन चढ़ाता हूँ॥24॥

पूजा मंत्र - ॐ ह्रीं अनंतसुखज्ञानदृग्वीर्यरूपाय भाक्तिकजनपञ्चकल्याण-प्रदायकाय श्रीतीर्थंकर परदेवाय नमः ।

अल्पज्ञता एवं उसका फल

भक्ति भाव युत इन्द्रों से,
नम्र हुए देवेन्द्रों से।
पूजित जिनके चरण कमल
वीतराग जिनदेव विमल॥

श्रेष्ठ ज्ञान के धारी जन,
जिनके अवधि ज्ञान नयन!
साधु सज्जन संत रहे,
गुण गाने असमर्थ रहे!

हम सा मूरख कौन भला?
जिनगुण गाने यहाँ चला
संस्तुतियों के छल-बल से,
गान किया अन्तस्तल से॥

शुद्ध भाव गुणगान करे,
जिन पदयुग सम्मान करे।
आत्मसुखी वह बन जाये,
कल्पवृक्ष सम फल पाये॥

भावों की निर्मलधारा में, आतम को नहलाता हूँ।
वादिराज मुनिवर के चरणों, श्रद्धा सुमन चढ़ाता हूँ॥25॥

पूजा मंत्र - ॐ ह्रीं स्वात्माधीनसुखेच्छुकजनकल्याणकल्पद्रुमाय श्रीतीर्थंकर परदेवाय नमः ।

लेखक - अभिनंदन

शब्द शास्त्र रचने वाले,
भाव अर्थ करने वाले।
वैयाकरण विशारद भी,
वादिराज से लघु सब ही॥

वाद-विवादी तर्कों के,
न्यायी-न्याय सुतर्कों के।
तर्क केशरी जितने भी,
वादिराज से लघु सब ही॥

जिनवर गीता छन्दों के,
काव्य पुनीता वृन्दों के।
रचने वाले कवी सभी
वादिराज से लघु सबहीं ॥

भक्त जनों के रक्षक सब,
जीवों के संरक्षक सब।
विभव दिलाने वाले भी,
वादिराज से लघु सब ही॥

भावों की निर्मलधारा में, आतम को नहलाता हूँ।
वादिराज मुनिवर के चरणों, श्रद्धा सुमन चढ़ाता हूँ।।26 ॥

पूजा मंत्र - ॐ ह्रीं शाब्दिक-तार्किक-काव्यकृत-भव्यगणोत्कृष्ट श्रीवादिराजसूरिकृत-एकीभावस्तोत्रस्वामिने श्रीतीर्थंकर परदेवाय

जयमाला

दोहा

आदिनाथ भगवान का, यह पावन दरबार।
मानो तो सम्मेद है, मानो तो गिरनार॥
अपनी-अपनी भावना, अपना है विश्वास।
यही अयोध्या तीर्थ है, यही तीर्थ कैलाश॥

तर्ज - नरेन्द्र फणीन्द्र (भुजंग प्रयात छन्द)

महामंगलों का, महारूप हैं ये।
महामंदिरों का, महामूर्त है ये॥
महामूर्तियों का, यहाँ है बसेरा।
महामंत्र गूंजे, निशा वा सबेरा॥1॥

कभी भी न सोचा, कहीं भी न देखा।
यहाँ पे मिला जो, अनोखा-अनोखा।
नमस्ते हमारा, नमस्ते हमारा।
नमो आदि बाबा, नमस्ते हमारा॥2॥

कहाँ के सताये, कहाँ के रूलाये।
यहाँ भक्त आये, सदा सौख्य पाये॥
सदा भक्त आते, सदा भक्त जाते।
प्रभो भक्त तेरा, यशोगान गाते॥3॥

कहीं पे रूलाया, यहाँ तू हँसेगा।
कहीं भाग्य सोया, यहाँ तो जगेगा॥
यहाँ दर्श पाते, महाभाग्यशाली।
मनाते दीवाली, महापुण्य शाली॥4॥

जपूँ जापमाला, महामंत्र प्यारा।
भजू नाममाला, स्वयंभू सहारा॥
मिटें दोष मेरे, मिले शान्ति मेरी।
कृपा शीघ्र चाहूँ, नहीं नाथ देरी॥5॥

सदा अर्चना में, बिताऊँ सवेरा।
सदा प्रार्थना से, करूँ मैं बसेरा॥
सदा आरती से, भगाऊँ अंधेरा।
जहाँ आप होवें, चला आऊँ टेरा॥6॥

तुमीं पे भरोसा, रहा नाथ मेरा।
तुमीं साथ दोगे, सदा नाथ मेरा॥
तुमीं हो खिवैया, तुमीं हो तरैया।
किनारे लगादो, हमारी सु-नैया॥7॥

खिले फूल जिसमें, स्वरों व्यंजनों से।
चुने फूल मैंने, उसी वाटिका से॥
गुणों से गुँथी है, यही पुष्पमाला।
इसे कण्ठ धारो, वरे मुक्तिवाला॥8॥

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ नि. स्वाहा।

दोहा - आदिनाथ प्रभु आपको, जयूँ सहस्त्रों बार।
बार-बार पूजा करूँ, बार-बार जयकार॥

(इति आशीर्वाद पुष्पम्)

काव्य संग्रह

1. गोम्मटेश्वर (प्रबन्ध काव्य)
2. द्वापर का देवता–अरिश्ट नेमि (प्रबन्ध काव्य)
3. आचार्य माघनन्दि (प्रबन्ध काव्य)
4. मंगलघट के भीतर अमृत (काव्य संग्रह)
5. सर्वज्ञ के चरणों में (आराधनाएँ)
6. ऋषभदेव एवं महावीर (पूजा)

कहानी संग्रह

1. नारी आलोक की नौ किरणें
2. जल की खोज अमृत की प्राप्ति

उपन्यास

1. नयी किरण नया सबेरा
2. आत्म शिल्पी (युगसंत आचार्य विद्यासागर जी का जीवन दर्शन)

लघु शोध प्रबंध

1. महावीराष्टक के अमर शिल्पी

चित्र कथाऐं

1. त्याग एवं प्रतिज्ञा
2. सत्यघोष
3. सिकंदर और कल्याण मुनि
4. टीले वाले बाबा
5. राजुल (हिन्दी, अंग्रेजी)
6. स्वर्ग की सीढ़ियाँ
7. चन्दन बाला आदि

सम्पादित

1. आधुनिक जैन कवि : चेतना के स्वर
2. समय के हस्ताक्षर
3. बिम्ब, प्रतिबिम्ब
4. अर्हत वन्दना
5. पत्थर मत मारो दर्पण में
6. अपने गीत नहीं बेचूँगा

अनुवाद

1. समय पर शिलालेख
   (समयसार, श्रमण सुत्तं उत्तराध्ययन की गाथाओं का काव्य रूपान्तर)

हिन्दी से अंग्रेजी में अनुदित

1. मुझे आपसे कुछ कहना है
2. क्रोध को कैसे जीते?

ध्वज गीत

1. जैन शासन का ध्वज गीत (रिकार्ड)
   (जैन धर्म के समस्त सम्प्रदायों द्वारा मान्य)

प्रकाशाधीन

1. पदम् चरित्र का काव्य सौन्दर्य
2. जल की खोज अमृत की प्राप्ति
3. सन्तवर्णी (चित्रमयी जीवनी)

	पुरस्कृत कृतियाँ	पुरस्कृत कर्ता
1.	भगवान महावीर और उनके सिद्धान्त	जैन ट्रस्ट कलकत्ता

2.	गोम्टेश्वर (प्रबन्ध काव्य) स्मृति पुरस्कार, कलकत्ता	प्रदीप कुमार रामपुरिया
3.	जल की खोज अमृत की प्राप्ति (कहानी संग्रह)	अखिल भारतवर्षीय साधु मार्गी जैन संघ, उदयपुर
4.	ज्योतिर्मय निर्ग्रन्थ (उपन्यास)	अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन शास्त्री परिषद् द्वारा कल्याण चन्द जैन शास्त्री पुरसकार, कलकत्ता स्वर्ण
5.	जैन शासन का ध्वज गीत	स्वर्ण पदक एवं प्रशस्ति पत्र अखिल भारत वर्षीय भगवान महावीर निर्वाण महोत्सव समिति समारोह, इन्दौर द्वारा : तात्कालिक महामहिम उपराष्ट्रपति श्री बी.डी. जत्ती के कर कमालें से
6.	वैशलिक की छाया में इस शताब्दी के 26 जैन साहित्यकारों में स्थान प्राप्त	

अलंकरण

जैन राष्ट्र गौरव (क्षेत्र-आध्यात्मिक कवि)	द्वारा अखिल भारतीय जैन प्रतिभा सम्मान समारोह समिति, कलकत्ता

अभिनन्दन

जैन समाज फिरोजाबाद, जैन समाज अजमेर, जैन समाज छतरपुर, जैन समाज ललितपुर, जै समाज विदिशा, जैन समाज अहमदाबाद, जैन समाज सतना, जैन समाज जयपुर, जैन समाज गुना, तीर्थक्षेत्र कमेटी थूबोन, जैन समाज कोटा, संस्कार भारती गुना आदि।

आकाशवाणी से काव्य प्रसारण।

परम पूज्य 108 आचार्य श्री विभवसागर जी महाराज के वर्षायोग स्थल

1. ललितपुर (उ.प्र.) 1995
2. जबलपुर (म.प्र.) 1996
3. भिण्ड (म.प्र.) 1997
4. मरैना (म.प्र.) 1998
5. मड़ावरा (उ.प्र.) 1999
6. हजारीबाग (झारखंड) 2000
7. कोतमा (म.प्र.) 2001
8. जबलपुर (म.प्र.) 2002
9. नागपुर (महाराष्ट्र) 2003
10. परभणी (महाराष्ट्र) 2004
11. श्रवणबेलगोला (कर्नाटक) 2005
12. शिरडशाहपुर (महाराष्ट्र) 2006
13. नागपुर (महाराष्ट्र) 2007
14. द्रोणगिरि सिद्धक्षेत्र (म.प्र.) 2008
15. जबलपुर (म.प्र.) 2009
16. टीकमगढ़ (म.प्र.) 2010
17. गढ़ाकोटा (म.प्र.) 2011
18. जयपुर (राज.) 2012
19. अशोकनगर (म.प्र.) 2013
20. सागर (म.प्र.) 2014

आचार्य श्री द्वारा सृजित साहित्य

1. अमृत गीता	1997 भिण्ड वर्षायोग
2. गुरु पूजा	1997 बड़ागाँव धसान
3. भक्तामर स्तोत्र (अनुवाद)	1999 मड़ावरा (वर्षायोग)
4. रयणसार (अनुवाद) (अप्रकाशित)	2000 अयोध्या एवं बनारस
5. लघु स्वयंभू स्तोत्र (अनुवाद)	2000 हजारीबाग, झारखण्ड
6. प्रवचन भारती	2001 कोतमा (वर्षायोग)
7. विरागष्टक (हिन्दी)	2001 कोतमा (वर्षायोग)
8. विरागाष्टक (संस्कृत)	2001 कोतमा (वर्षायोग)
9. मंदिर गीता (कल्याणमंदिर स्तोत्र पर भावानुवाद)	2002 डिण्डौरी (ग्रीष्मकाल)
10. एकीभाव स्तोत्र (अनुवाद)	2003 भेड़ाघाट, जबलपुर
11. विषापहार स्तोत्र (अनुवाद)	2003 बहोरीबंद, जबलपुर
12. जिनवर गीता (एकीभाव स्तोत्र का भवानुवाद)	2003 नागपुर (वर्षायोग)

13. वंदन गीता (लघुस्वयंभू स्तोत्र पर भवानुवाद)	2003 नागपुर
14. तीर्थंकर विधान	2003 नागपुर
15. एकीभाव विधान	2003 डिण्डौरी (म.प्र.)
16. धर्म भारती (भाग–1)	2002 सागर (ग्रीष्मवाचना)
17. धर्म भारती (भाग–2)	2003 सोलापुर (ग्रीष्मवाचना)
18. धर्म भारती (भाग–3)	2006 सोलापुर (ग्रीष्मवाचना)
19. धर्म भारती (भाग–4)	2006 सोलापुर (ग्रीष्मवाचना)
20. गोमटेश विधान	2005 श्रवणवेलगोला (वर्षायोग)
21. गोमटेश्वर अर्घावली (अप्रकाशित)	2005 मुक्तागिरि सिद्धक्षेत्र)
22. मुक्तागिरि (पूजा अर्घावली) (अप्रकाशित)	2004 नागपुर (वर्षायोग)
23. तीर्थंकर शिक्षण	2003 परभणी (वर्षायोग)
24. सुनहरा अवसर (प्रवचन कृति)	2004 परभणी (वर्षायोग)
25. रात्रि भोजन त्याग (प्रवचन कृति)	2004 परभणी (वर्षायोग)
26. जीवन है पानी की बूंद (प्रबचन कृति)	2004 परभणी (वर्षायोग)
27. घर को स्वर्ग कैसे बनायें? (प्रवचन कृति)	2004 परभणी (वर्षायोग)
28. आनंद यात्रा (रचित भजन)	2004 परभणी (वर्षायोग)
29. सम्मेद शिखर वंदना (अप्रकाशित)	2007 कामठी क्षेत्र महाराष्ट्र
30. निर्ग्रन्थ गुरुपूजा	2008 द्रोणगिरी वर्षायोग
31. तीर्थंकर संस्तुति	2008 द्रोणगिरी वर्षायोग
32. द्रोणगिरी विधान	2008 द्रोणगिरी वर्षायोग
33. पात्रकेशरी स्तोत्र (अनुवाद) अप्रकाशित)	2003 नागपुर
34. अकलंक स्तोत्र (अनुवाद)	2005 श्रवणवेलगोला
35. जिनवरस्तोत्र	2009 छतरपुर शीतकाल
36. कुलभूषण चरित्र (काव्य)	2005 कुंथगिरी यात्रा

37. बारह भावना	2005 श्रवणवेलगोला
38. उपसर्गहर स्तोत्र (अनुवाद)	2009 पार्श्वगिरी भगवाँ
39. गुरुमंत्र	2007 नागपुर
40. कुण्डलपुर विधान	2009 जबलपुर
41. हृदय प्रवेश	2009 दमोह
42. दशलक्षण देशना	2009 जबलपुर (वर्षायोग)
43. अक्षर-अमृत	2009 जबलपुर
44. हृदय परिवर्तन	2009 जबलपुर
45. भक्ति भारती	2010 टीकमगढ़ (वर्षायोग)
46. भक्ति भाषा	2009 दमोह
47. संस्तुति सरिता	2011 पटेरियाजी
48. आलोचना सार	2010 टीकमगढ़
49. विश्वशान्ति विधान	2010 टीकमगढ़
50. विधान-विभव	2013 जयपुर
51. भक्तामर शास्त्र	2012 जयपुर
52. अरहनाथ विधान एवं नवागढ़ क्षेत्रपूजा	2012 जयपुर
53. सम्यक् दर्शन शास्त्र	2014 जयपुर